an>

Title: Need to declare the birthday of Bhagwan Parshuram as a National Holiday.

श्री चन्द्र प्रकाश जोशी (चित्तौड़गढ़) : माननीय सभापति महोदय, हम ऋÂिष परम्परा राÂष्ट्र हैं। श्रेÂष्ठ आर्य संस्कृति के समुच्चय आर्यावर्त में सतयुग (कृतयुग), त्रेता, द्वापर, कलियुग में समय-समय पर अवतारों ने जन्म लिया, ऋÂिष-मुनियों ने लोक का नेतृत्व कर जन-गण को साधा। इन्हीं अन्वेÂाक ऋाष्Âिायों के ज्ञान, तप, अन्वेÂषणों से भारत विश्व गुरु कहलाया। आर्य संस्कृति के प्रसार से "वसुधैव कुटुम्बकम् " का स्वप्न साकार किया जा सकता है। आर्य संस्कृति के ध्वज-वाहक अवतारों, प्रचेताओं, ऋÂिषयों की स्मृति को अक्षुण्ण बनाने के लिये महान भारतीय संसद ने कई शुभ संकल्प पारित किये हैं। स्मृति स्वरूप डाक टिकट जारी करना, जयन्ती पर अवकाश घोÂिषत करना, ऐसे दिव्य आत्माओं को समर्पित संस्थाओं का गठन, इनकी मूर्तियों का अनावरण आदि ।

"कृÂण्वन्तो विश्वमार्यम् " का घोÂष दसो दिगन्त में गुंजाने वाले महाऋÂिष जामदास्य श्री परशुराम जी का जन्म दिवस अक्षय तृतीया अभी इस गौरव से वंचित है। सम्पूर्ण विश्व के लगभग करोड़ों लोगों के आद्यदेव भगवान श्री परशुराम जी के जनम दिवस अक्षय तृतीया पर प्रतिवÂर्ष राÂष्ट्रीय अवकाश घोÂिषत होना चाहिए क्योंकि-

जामदास्य श्री परशुराम, मरीची, भृगु, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, दक्ष, क्रतु, अत्रि, वशिष्Âठ, विश्वामित्र, भारद्वाज ऋÂिषयों की परम्परा के ध्वजवाहक हैं।

दसम् अवतार के रूप में जामदास्य राम का अवतरण हुआ। धर्म की स्थापना व अधर्म के नाश हेतु उनहोंने अपने नाम को चरितार्थ किया।

आर्यावर्त का सर्वप्रथम राजनीतिक, सांस्कृतिक एकीकरण जामदस्य श्री परशुराम जी ने ही किया। तत्कालीन अवन्ती, विदर्भ, शंबर क्षेत्र, असम, अरूणाचल, कैलाश ब्रह्मानद, गांगेय, कान्यकुन्ज, यमुनाक्षेत्र, सारस्वत क्षेत्र, कुंभा, आदिस्थान, वाल्मिकी, कश्यप देश, मुजारत, गिरीद्वार, बल्ज, कपिशा, कंदहार, परशुपुर, रूस, अटक, बलूचिस्तान, ईरान, शकस्थान, बृजिस्थान, पार्थिया, परसुदेश एवं कश्यप सागर आदि दुर्गम क्षेत्रों में स्वयं जाकर आर्य-अनार्य जनों का राजनीतिक-सांस्कृतिक एकीकरण करने का काम किया।

मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूँ कि 9 तारीख को अक्षय तृतीया है, करोड़ों जनों के आद्य देव भगवान परशुराम जी के दिन को राष्Âट्रीय अवकाश घोÂिषत किया जाए।

HON. CHAIRPERSON:

Shri Ravindra Kumar Pandey,

Shri Sharad Tripathi,

Shri P.P. Chaudhary,

Shri Sudhir Gupta, are permitted to associate with the issue raised by Shri C.P. Joshi.